ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-5* June- 2020
Innovation The Research Concept

महात्मा गाँधी और गाँधीवाद का साहित्य पर प्रभाव

Mahatma Gandhi and Gandhism's Influence on Literature

Paper Submission: 15/06/2020, Date of Acceptance: 26/06/2020, Date of Publication: 27/06/2020

अनिल अग्रवाल
शोध पर्यवेक्षक,
सहायक आचार्य एवं
विभागाध्यक्ष
हिंदी विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, हिंडौन सिटी,
करौली, राजस्थान, भारत

कृष्ण बिहारी पाठक
शोध छात्र,
हिंदी विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, हिंडौन सिटी,
करौली, कोटा विश्वविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

अधर्म और अन्याय में तत्पर अंग्रेजों ने जब भारत की राष्ट्रीय सांस्कृतिक अस्मिता को चुनौती दी तो ऐसे समय में शक्ति की मौलिक कल्पना के साथ,अहिंसा सत्याग्रह, स्वराज, स्वदेशी, स्वावलंबन के पवित्र साधनों को अस्त्र बनाकर मोहनदास करमचंद गाँधी जी आगे आए। गाँधी जी के शुचितापूर्ण जादुई व्यक्तित्व का प्रभाव ये हुआ कि वे एक व्यक्ति से उठकर एक विचार, एक संप्रत्यय बनकर उभरे जिसे गाँधीवाद कहा जाता है। गाँधी जी और गाँधीवाद के प्रति तत्कालीन जनमानस में पूज्यबुद्धि गर्भित आदर भाव ही साहित्य में मुखरता के साथ व्यक्त हुआ जिसने देश में राष्ट्रीय सांस्कृतिक वातावरण निमार्ण में महती भूमिका निभाई और जन सामान्य को आंतरिक और बाहरी विषमताओं, द्वंद्वों और संघर्षों से लडने के लिए नयी संजीवनी का कार्य किया।

Mohandas Karamchand Gandhi ji came forward with the original imagination of power at the time when the British were ready in unrighteousness and injustice, challenging the national cultural identity of India. Gandhi's puritanical magical personality had the effect that he emerged from a person to become an idea, a theory, called Gandhiism. The revered reverential gesture towards Gandhiji and Gandhism was expressed in the literature with an outspoken sense that played a major role in the creation of the national cultural environment in the country and the new life to fight the common and internal inequalities, conflicts and conflicts. Worked on

मुख्य शब्द : गाँधीवाद, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज, स्वावलंबन, द्विवेदी युग, छायावाद, छायावादोत्तर युग, स्वदेशी।

Gandhism, Ahimsa, Satyagraha, Swaraj, Swavalamban, Dwivedi Yuga, Chhayavad, Post-Chaivad Yuga, Swadeshi.

प्रस्तावना

भारत! इस महादेश, महामान व समुद्र का सौभाग्य रहा कि जब जब इस देश की इयत्ता अस्मिता पर संकट आया तब तब यहाँ ऐसे मनीषियों ने जन्म लिया जिन्होंने अपनी संकल्प शक्ति और असाधारण प्रतिभा से संकटों को अवसर में बदलते हुए देश की अस्मिता इयत्ता को न केवल जीवित रखा अपितु देश के गौरव को दिग्दिगंत में नयी ऊंचाईयां प्रदान की।

अधर्म और अन्याय में तत्पर अंग्रेजों ने जब भारत की राष्ट्रीय सांस्कृतिक अस्मिता को चुनौती दी तो ऐसे समय में शक्ति की मौलिक कल्पना के साथ, अहिंसा सत्याग्रह, स्वराज, स्वदेशी, स्वावलंबन के पवित्र साधनों को अस्त्र बनाकर मोहनदास करमचंद गाँधी जी आगे आए जिन्होंने एक ओर तो देश के बाहरी शत्रुओं अंग्रेजों को जनता में आत्मबल और आत्मशक्ति जगाकर पराजित किया, और दूसरी ओर देश के आंतरिक शत्रु तत्कालीन कुरीतियों अंधविश्वासों आदि को जन जन में उच्च जीवन मूल्यवादी दृष्टि विकसित कर घुटने टेकने पर विवश किया।

गाँधी जी साधारण होकर भी असाधारण थे, निर्विशेष होकर भी विशेष थे उनके व्यक्तित्व में विरोधों का वैसा ही समन्वय था जैसा आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने निबंध लोकमंगल की साधनावस्था में कल्पित किया है –''लोक में फैली दुख की छाया को मिटाने में ब्रह्म की आनंदकला जो शक्तिमय रूप धारण करती है उसकी भीषणता में भी अद्भुत मनोहरता, कटुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडता में भी गहरी आर्द्रता साथ लगी रहती है। विरुद्धों का यही सामंजस्य कर्मक्षेत्र का सौंदर्य है जिसकी ओर आकर्षित हुए बिना मनुष्य का हृदय नहीं रह सकता। भीषणता और सरसता, कोमलता और कठोरता, कटुता और मधुरता, प्रचंडता और मृदुता का सामंजस्य ही लोक धर्म का सौंदर्य है। '' विरोधों के समन्वय को लक्ष्य

कर ही संभवत अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि '' आने वाली नस्लें शायद ही विश्वास करें कि हाड मांस से बना ऐसा इंसान इस धरती पर चलता था। ''

युग निर्माता, युग दृष्टा, युग परिवर्तनकारी इस चुंबकीय व्यक्तित्व ने जब देश देशांतर तक के मनीषियों को आकर्षित किया तो देश के भीतर रहने वाले मनीषी, साहित्यकार कैसे अछूते रह सकते थे।गाँधी जी साहित्य में इस तरह नाना भाँति नाना रूप आविष्ट थे कि वे मैथिलीशरण गुप्त के साकेत में राम बनकर, भीष्म साहनी के तमस में जरनैल बनकर, रामवृक्ष बैनीपुरी के रेखाचित्र में सुभान खाँ बनकर आते हैं। मैला आंचल में वे बामनदास हैं तो रंग भूमि में सूरदास। रामनरेश त्रिपाठी के पथिक वे हैं तो हजारी प्रसाद द्विवेदी के शिरीष भी। बालकृष्ण शर्मा नवीन उन्हें युग परिवर्तन कालेश्वर कहते हैं तो गिरिराज किशोर – पहला गिरमिटिया । गाँधी जी के शुचितापूर्ण जादुई व्यक्तित्व का प्रभाव ये हुआ कि वे एक व्यक्ति से उठकर एक विचार, एक संप्रत्यय बनकर उभरे जिसे गाँधीवाद कहा जाता है।इस गाँधीवाद का व्यापक प्रभाव तत्कालीन साहित्य और साहित्यकारों पर पडा जिसे हम द्विवेदी युग, छायावाद युग और छायावादोत्तर युग में गाँधी जी के प्रभाव के रूप में देख समझ सकते हैं –

द्विवेदी युग और महात्मा गाँधी

सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन से लेकर छायावादी काव्य धारा के आगमन तक का काल (1900–1920 लगभग) सरस्वती के यशस्वी संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी के शुभ प्रभाव से द्विवेदी युग कहलाता है और इस युग के बडे कवियों में सर्वप्रथम मैथिलीशरण गुप्त का नाम आता है जिन्हें स्वयं गाँधी जी राष्ट्र कवि के विशेषण से विभूषित करते हैं और गाँधी जी और गाँधीवाद में गुप्त जी की आस्था का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि आलोचक उन्हें गाँधीयुग का कालिदास, गाँधीयुग का प्रतिनिधि कवि कहते हैं, कि वे बनावट और बुनावट में गाँधीवादी हैं, कि भारत छोड़ो आंदोलन में वे जेल गए थे। इन पर गाँधी जी के प्रभाव के संदर्भ में डॉ बच्चन सिंह ने लिखा है – ''वे धर्म में विशिष्टाद्वैतवादी, विचारों में गाँधीवादी और साहित्य में अभिधावादी हैं.... उनके काव्य का लक्ष्य लोकहित, सद्भाव का संचार और ज्ञान का प्रकाश है... पंचवटी को छोड़ शेष रचनाओं में वह राजनीतिक वैतालिक प्रतीत होता है ',1,स्पष्ट ही गुप्त जी के साहित्य में गाँधी जी का प्रभाव परिलक्षित है और यही कारण है कि काबा कर्बला की भूमिका में वे हिंदू मुस्लिम एकता की बात करते हैं तो मंगलघट में राम–रहीम, बुद्ध–ईसा का सुलभ एक सा ध्यान यहाँ जैसी इबारत लिखते हैं, स्वदेश संगीत गीतिकाव्य में तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन के गीत गाते हैं । हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास में बच्चन सिंह लिखते हैं – उनका राजनीतिक विचार गाँधीवाद से प्रभावित था। गाँधी जी के न्यासवादी सिद्धान्त में उनकी गहरी आस्था थी।''[2],

गुप्त जी के राम काव्य साकेत में तो ऐसे कई दृश्य देखे जा सकते हैं जो गाँधीवाद के चश्मे से कवि ने देखे हैं यथा राम को वनवास जाने से रोकते साकेत वासी लोकतांत्रिक प्रजातंत्र की वाणी बोलते हैं – '' राजा हमने राम, तुम्हीं को है चुना।

करो ना तुम यों हाय! लोकमत अनसुना।'[3],

इतना ही नहीं साकेत वासी सत्याग्रह करते हुए सविनय अवज्ञा आंदोलन की तर्ज पर कह उठते हैं –

''जाओ यदि जा सको,रौंद हमको यहाँ।
यों कह पथ में लेट गए बहुजन वहाँ ।।''[3],

सविनय अवज्ञा को कवि ने राम के मुख से विनत विद्रोह नाम दिया है – उठो प्रजाजन उठो, तजो यह मोह तुम।

करते हो किस हेतु विनत विद्रोह तुम।।[3],

वन को जाते राम का जन्मभूमि से प्रेम स्वदेश प्रेम है –

जन्मभूमि ले प्रणति! और प्रस्थान दे।..

आठवें सर्ग में गाँधी जी के स्वावलंबन का प्रभाव है। चित्रकूट में सीता का यह चित्र देखिए –

'' औरों के हाथों यहां नहीं पलती हूँ।
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ।।''[4]

इसी सर्ग में वन की कोल भील किरात महिलाओं से हिलमिल कर रहती सीता में गाँधी जी के अछूतोद्धार, जैसे सपने कवि ने छंदबद्ध किए हैं –

ओ भोली कोल किरात भिल्ल बालाओं।
मैं आप तुम्हारे यहाँ आ गयी, आओ।। [4],

इतना ही नहीं गाँधी जी के खादी और चरखा भी कवि की लेखनी से देशराग गाते हैं – आओ हम काते बुनें गान की लय में। 4, इसी तरह कुटीर की सज्जा सौंदर्य में स्वच्छता अभियान की और वृक्षारोपण, सिंचाई आदि कार्यों में तथा कवि द्वारा सीता में भारत लक्ष्मी की परिकल्पना में भी गाँधी दर्शन की गहरी छाप दिखती है, गुप्त जी की कल्पना में गाँधी जी के सपनों का भारत है तभी तो साकेत में राम कहते हैं –

संदेश यहां मैं नहीं स्वर्ग का लाया।
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।।

भूतल को स्वर्ग बनाते कवि के कानों में गाँधी जी के ग्राम्य प्रेम की गूंज भी है – अहा! ग्राम जीवन भी क्या है। गाँधी जी का ये गीत बंधु उनकी आकस्मिक मृत्यु से विह्वल होकर रोता है, बिसूरता है 'अंजलि और अर्घ्य' में।

गुप्त जी पर एक ओर जहां गाँधी जी का अमिट प्रभाव रहा तो वहीं दूसरी ओर गाँधी जी गुप्त जी के अनन्य प्रशंसक थे, महादेवी वर्मा ने एक स्मृति में लिखा है– '' बीसवीं शती में राष्ट्रकवि को युग पुरुष गाँधी जैसा प्रशंसक मिल गया, जिन्होंने अपने व्यस्त समय में.... साकेत को तीन दिन में समाप्त किया... राष्ट्र कवि की पदवी भी बापू ने उन्हें दी है। ''[5],

गुप्त जी पर गाँधी जी के प्रभाव को लेकर समीक्षक प्रेमशंकर ने 'गुप्त जी का सामाजिक कथ्य' लेख में लिखा है – ''साकेत पर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और गाँधी युग के गहरे प्रभाव हैं... मैथिलीशरण पर सबसे प्रमुख दबाव उस गाँधी युग का है... अहिंसा, सत्य आदि का आग्रह राष्ट्रीय कवि में बराबर मौजूद है... भ्रष्टाचार, अन्याय, चरित्रहीनता, छात्र आंदोलन, यहां तक कि पूंजीवादी दबाव पर भी समाधान गाँधीवादी है... राष्ट्रकवि का व्यक्तित्व राष्ट्रपिता.. से.. अभिभूत सा दिखाई देता है।''[6],

यह कहा जा सकता है कि गुप्त जी कलम में जो स्याही भरी थी वो गाँधी दर्शन की थी, गाँधी जी की लोक चेतना के संदर्भ में श्याम सुंदर दुबे ने लिखा है – ''गांधी जी के चिंतन और कर्म को लोक शक्ति ने गहनता से प्रभावित किया... गाँधी जी के इस महान समारम्भ को साहित्य कर्मियों ने रचना प्रक्रिया में समाहित किया।'' [7], दुबे जी के इस कथन का अक्षर अक्षर सत्य है कि गुप्त जी ही नहीं इस युग का हर कवि और हर कविता गाँधीवाद की सुगंध से सुरभित है। गुप्त जी के ही छोटे भाई सियाराम शरण गुप्त 'बापू' तथा 'नौआखली' कृति में गाँधी जी का गुणगान करते हैं। अहिंसा का समर्थन करती ये पंक्तियाँ कितनी सुन्दर हैं –

''हिंसानल से शांत नहीं होता हिंसानल।..
हिंसा का है एक अहिंसा ही प्रत्युत्तर।।'' [8],

अपनी भावाकुल संवेदनशीलता से देश भक्ति को रसात्मक रूप देने वाले राम नरेश त्रिपाठी की कविता में गाँधीवादी सात्विकता की झलकियां हैं, त्रिपाठी के खंडकाव्य पथिक में गाँधी जी को ही पथिक रूप में चित्रित किया है , माखनलाल चतुर्वेदी ने निशस्त्र सैनानी को गाँधी जी पर लिखी प्रथम कविता माना है उनकी कविता अदालत में सत्याग्रह के नाते बयान में और श्रीधर पाठक की कविता भ्रमरगीत में सत्य और अहिंसा की ही तो व्याख्या है। 9, पांडेय बेचन शर्मा उग्र अपने नाटक महात्मा ईसा में ईसा और गाँधीजी में सामंजस्य दिखाते हैं । 10, निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस युग के साहित्य और साहित्यकारों पर गाँधी जी और उनके दर्शन दोनों का ही प्रभाव पूर्णता लिए हुए है।

छायावाद और महात्मा गाँधी

हिंदी साहित्य में छायावाद युग 1918 ईस्वी से लगभग 1938 ईस्वी के मध्य माना जाता है और यही वह कालखंड है जिसमें गांधी जी के राष्ट्रीय आंदोलनों की धूम रही। असहयोग, सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा, स्वदेशी, स्वराज, स्वच्छता, श्रम, स्वावलंबन, सामरस्य, जैसे संप्रत्यय मूर्त –अमूर्त, प्रत्यक्ष – परोक्ष रूप से तत्कालीन जनमानस में आविष्ट थे तो कैसे संभव है उस समय के साहित्यकार इनसे अछूते रह जाते। युगीन साहित्यकारों ने गाँधी जी को अपने जीवन और साहित्य में एक साथ पूरी श्रद्धा और विश्वास से उतारा जिसका परिणाम ये हुआ कि रोमानी भाव बोध, रहस्यात्मकता और अंतःप्रज्ञा पर आधृत छायावादी कविता से लेकर ,राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा तक हर कविता में काल्पनिक गद्य विधाओं से लेकर वास्तविक गद्य साहित्य तक हर कलम और हर पृष्ठ पर गाँधी जी की ही इबारतें थी। इस युग में एक ओर महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा लिखी जिसे हरिभाऊ उपाध्याय ने हिंदी में अनूदित किया तो दूसरी ओर गाँधी जी को केंद्र में रखकर प्रचुर जीवनी साहित्य इस युग में रचा गया।

विशेष बात तो यह रही कि छायावादी शैली के लिए रूढ़ साहित्यकार भी उस इंद्रजाल से न बच सके जिसका नाम महात्मा गाँधी था।

सबसे पहले जयशंकर प्रसाद की बात करें तो तो हम पाएंगे गाँधी जी के प्रभाव से वे अछूते नहीं, उनके दुःख मिश्रित आनंद भाव को बच्चन सिंह ने गाँधी जी से जोड़कर कहा है – ''वे दुःख में संलग्न होते हुए आनंद में पर्यवसित होते हैं। इसे गाँधी के जीवन दर्शन के समानांतर भी देखा जा सकता है। गाँधी जी ने जीवन में दुःख को बहुत महत्व दिया है। वे कहते हैं प्रेम की कसौटी तपस्या है और तपस्या आत्मपीडा है। '' 11,गौर से देखा जाए तो तो कविता से कहानी तक, और नाटकों से गीतों तक प्रसाद साहित्य आनंद और पीड़ा की इन्हीं लहरों का राजहंस है।

कामायनी में श्रद्धा का तकली पर सूत कातना, हिंसा का विरोध करना और मनु को प्रवृत्ति का संदेश देना गाँधीवाद का ही प्रभाव है। सर्वात्मवाद की ये पंक्तियाँ गाँधी दर्शन की द्योतक हैं –

–''औरों को हँसते देखो, मनु हँसो और सुख पाओ।..

कामायनी से ही कुछ पंक्तियाँ देखिए–

–तुम दूर चले जाते हो जब
तब लेकर तकली यहां बैठ,
मैं बैठी गाती हूँ तकली के
प्रतिवर्तन में स्वर विभोर।...
–प्रकृति शक्ति तुमने यंत्रों से सबकी छीनी।
शोषण कर जीवनी बना दी जर्जर झीनी।।.. [12],

कामायनी में मधुचर्या की ओट में उपभोक्तावाद पर जो आलोचनात्मक दृष्टि डाली है वो गांधी जी के हिंद स्वराज से प्रभावित है और कामायनी की श्रद्धा गाँधीवादी मूल्यों का पुंजीभूत रूप है। प्रसाद ने गाँधी दर्शन को आधार बनाकर ही राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को वाणी दी है। अपने विशाख नाटक में गाँधी जी को वे प्रेमानंद के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो कहता है – '' सत्य को सामने रखो, आत्मबल पर भरोसा रखो,न्याय की मांग रखो। '' 13,गाँधी जी की आध्यात्मिक विचारधारा को वे कामना नाटक में व्यक्त करते हैं, तो गाँधी जी की सांस्कृतिक, राष्ट्रीय विचारधारा को विविध गीतों में व्यक्त करते हैं, विशेष रूप से पूरे के पूरे चंद्रगुप्त नाटक पर गाँधी जी के नेतृत्व में चलने वाले राष्ट्रीय आंदोलन की गहरी छाप है, प्रसाद ने इतिहास के पन्नों से राष्ट्रीयता, जातीयता और अखंडता के सभी बिंदुओं को खोज निकाला है।

छायावाद युग में प्रकृति के सुकुमार कवि पंत ज्योत्स्ना नाटक में गाँधी दर्शन रूपायित करते हैं तो लोकायतन में गाँधी जी को पात्र बना प्रस्तुत करते हैं। 'बापू के प्रति' कविता में गाँधी जी के सत्य, अहिंसा, प्रेम के सिद्धांत को अभिव्यक्ति देते हैं –

''पशुबल की कारा से जग को
दिखलाई आत्मा की विमुक्ति।
विद्वेष घृणा से लडने को सिखलाई
दुर्जय प्रेम की युक्ति।। ''[14],

पंत की कविता भारत माता तो जैसे गाँधी जी की ही वाणी है–

भारत माता ग्रामवासिनी।
... अपने घर में प्रवासिनी।

भारत माता मानों गाँधी को ही पुत्र रूप में पाने को तप करती है। – सफल आज उसका तप संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन मन भय, भव तम श्रम। [15],

गाँधी जी अहिंसा दर्शन को यहां अमोघ मंत्र माना गया है जो समस्त दुःख, पीड़ा और संकटों से मुक्ति दिलाने वाला है।

महादेवी वर्मा ने धरती के अमर पुत्र के रुप में संधिनी गीति संग्रह में बापू के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है

– हे धरा के अमर सुत तुमको अशेष प्रणाम।
जीवन के अजस्र प्रणाम, मानव के अनंत प्रणाम। [16],

धरा के इस अमर पुत्र ने अंग्रेजों के विरूद्ध सत्य, अहिंसा, जैसी मौलिक शक्ति की कल्पना की थी, निराला की लंबी कविता राम की शक्ति पूजा में जामवंत भी राम को शक्ति की मौलिक कल्पना का सुझाव देते हैं

– '' शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।
छोड दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनंदन।। '' ख17,

कहने का आशय यह कि जब छायावादी शैली में गाँधी जी की छाप इतनी गहरी है तो तत्कालीन राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के गाँधीविहीन अस्तित्व की कल्पना भी दूभर है।

छायावाद काल में प्रेमचंद ने गाँधीवाद को मानववाद के रूप में स्वीकृत किया तो जैनेंद्र और सियाराम शरण गुप्त ने आध्यात्मिक धरातल पर जो कि हृदय परिवर्तन और आत्मपीडन स्वीकारता है।प्रेमचंद के समर यात्रा कहानी संग्रह में गाँधी जी के नेतृत्व में चलने वाले राष्ट्रीय आंदोलन का चित्रण। सही मायने में हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद ही गाँधी जी को लाए, इस संदर्भ में बच्चन सिंह ने लिखा है –

''महात्मा गाँधी की कार्यप्रणाली, जीवन दर्शन और व्यक्तित्व के प्रति प्रेमचंद की अगाध श्रद्धा थी। 'प्रेमाश्रम' गाँधीवाद के प्रभाव में ही लिखा गया था।.. 'रंगभूमि' में अंधे सूरदास का सत्याग्रह व्यक्तिगत सत्याग्रह है.. जो अन्याय के विरुद्ध अकेले लडने का निश्चय कर कहता है कि – मैं हाकिमों को दिखा देता कि एक दीन अंधा आदमी एक फौज को पीछे हटा देता है।''[18], दीन हीन वंचित में सत्याग्रह के बल का यही आत्मविश्वास गाँधी जी चाहते थे। गाँधी जी के आंदोलनों का साहित्यिक रूपांतरण कर्मभूमि है तो गोदान गाँधी जी का महाकाव्यात्मक विस्तार जिसके संदर्भ में आलोचक रामविलास शर्मा ने लिखा है कि गोदान में प्रेमचंद ने गाँधी और मार्क्स को फैंटकर मिलाया है।

छायावादोत्तर युग और महात्मा गाँधी

छायावादोत्तर कवियों में विप्लववाद के स्वर के साथ गाँधीवादी आस्था भी मिलती है। माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, भगवती चरण वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर, नरेंद्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल अंचल आदि इसी श्रेणी के कवि हैं। दिनकर की रेणुका विप्लव और अहिंसा के संधि स्थल पर लिखी गई कृति है।

छायावाद के बाद का युग प्रगतिवाद – प्रयोगवाद का युग है।

प्रगतिवाद जहाँ शोषक शोषित मे वर्ग संघर्ष से साम्य चाहता है वहीं गाँधीवाद शोषक के हृदय परिवर्तन द्वारा समरसता की अभिशंषा करता है। गाँधी दर्शन से सारोकार न रखते हुए भी नागार्जुन गांधी जी के प्रति श्रद्धानवत है – ''व्यक्ति व्यक्ति के मंदिर में विद्यमान हो निविड तिमिर में देव तुम्हीं जाज्वल्यमान हो।''

नागार्जुन जहाँ गाँधी जी के मरण पर लिखते हैं वहीं त्रिलोचन उनके कर्म को कविता का विषय बनाते हैं, दिनकर अपनी कविता में – गाँधी को जिंदा रखने की चाह व्यक्त करते हैं तो भवानी प्रसाद मिश्र उन्हें वृहदकाव्य का विषय बनाकर–गाँधी पंचशती लिख कर उनका मुक्त कंठ गुणगान करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय साहित्य पर महात्मा गाँधी के दर्शन और विचारों के प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रभाव का अध्ययन करना है जिसके अंतर्गत गाँधीवाद के मौलिक संप्रत्यय यथा स्वदेशी, स्वराज, स्वच्छता, स्वावलंबन, सत्याग्रह आदि के साहित्यिक अनुशीलन को साहित्येतिहास के विविध काल खंडों के संदर्भ में रेखांकित किया गया है।

निष्कर्ष

गांधी जी को शब्दों में परिभाषित नहीं किया जा सकता है कि गाँधी जी एक सर्वांगपूर्ण व्यक्तित्व हैं और व्यक्तित्व से परे अक्षुण्ण संप्रत्यय है जो हर युग में, हर दशा में, हर दिशा में प्रासंगिक हैं उनकी प्रासंगिकता को लक्ष्य कर आचार्य प्रवर हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के फूल निबंध में शिरीष से गाँधी जी का साम्य दिखाते हुए गाँधी जी के अभाव के प्रति खेद व्यक्त किया है कि आज की परिस्थितियों में तो गांधी जी की जरूरत और भी अधिक है – ''इस चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है... हमारे देश के ऊपर से जो यह मारकाट, अग्निदाह, लूटपाट, खून–खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों?... क्योंकि शिरीष भी अवधूत है, शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मैं जब जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब तब हूक उठती है – हाय वह अवधूत आज कहाँ है? ''

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *सिंह, डॉ बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास (2014 सातवीं आवृत्ति),पृष्ठ 313,राधा कृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली*
2. *वही, पृष्ठ 315*
3. *गुप्त, मैथिलीशरण, साकेत (पंचम सर्ग), लोक भारती प्रकाशन, 2008 ईस्वी*
4. *वही,अष्टम सर्ग*
5. *संपादक – विजय अग्रवाल, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, (प्रणाम – महादेवी वर्मा), प्रकाशक – प्रकाशन विभाग(1994)*
6. *वही,(गुप्त जी का सामाजिक कथ्य – प्रेमशंकर, पृष्ठ 65–75)*
7. *वही, (गुप्त जी के काव्य में लोक तत्व, पृष्ठ 125)*
8. *अरुण, प्रोफेसर विश्वंभर, बाबू गुलाब राय ग्रंथावली–6 (पृष्ठ197) आत्माराम एंड संस प्रकाशन*
9. *पाठक, श्रीधर, भ्रमरगीत*
10. *उग्र, पांडेय बेचन शर्मा, महात्मा ईसा*

11. सिंह, डॉ बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास (2014 सातवीं आवृत्ति),पृष्ठ 337,राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
12. प्रसाद, जयशंकर, कामायनी, भारती भंडार, लीडर प्रेस इलाहाबाद, दशम संस्करण, 1958ईस्वी
13. प्रसाद, जयशंकर, विशाख
14. पंत, सुमित्रा नंदन, बापू के प्रति
15. पंत, सुमित्रा नंदन, भारत माता, सरयू, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर
16. वर्मा, महादेवी, संधिनी
17. निराला, सूर्यकान्त त्रिपाठी, राम की शक्तिपूजा (अनामिका) भारती भंडार, लीडर प्रेस इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1938 ईस्वी
18. सिंह, डॉ बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास (2014 सातवीं आवृत्ति),पृष्ठ 374, राधा कृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली